***Dr. REETU RAJ***

*Assistant Professor*

*Department of HISTORY*

*RAJA SINGH COLLEGE SIWAN*

*(Jai Prakash University Chapra)*


*Lecture Notes on* -- पानीपत के प्रथम युद्ध **(21 अप्रैल, 1526)** में बाबर की विजय के **कारण।**

*(for TDC Part 2 HISTORY HONOURS)*

**पानीपत के प्रथम युद्ध (21 अप्रैल, 1526) में बाबर की विजय के कारण।**

पानीपत के युद्ध में इब्राहीम लोदी की पराजय और बाबर की विजय के निम्नलिखित कारण थे-

1. बाबर एक अनुभवी और महान् सेनानायक था। उसने रण-क्षेत्र में वह प्रत्येक चाल अपनाई जिससे शत्रु घबरा गया। इतिहासकार लेनपूल के अनुसार "पानीपत के रणक्षेत्र में, मुगल सेनाओं ने घबराकर युद्ध आरम्भ किया, लेकिन उनके सम्राट की वैज्ञानिक योजना और अनोखी चालों ने उन्हें आत्मविश्वास और विजय प्रदान की।

2. बाबर की विजय में सर्वाधिक योगदान उसके शक्तिशाली तोपखाने ने दिया. इस युद्ध में लोदी के पास कोई तोपखाना नहीं था और न ही उनके पास गोलाबारी

की कोई विशेष सामग्री ही।ऐसी स्थिति में बाबर के तोपखाने ने अफगान सेनाओं पर कहर बरपा दिया।

3. इब्राहीम लोदी एक क्रोधी तथा सनकी सुल्तान था। उसने कभी भी अमीरों तथा सैनिकों के साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया, जिससे वे उसकी नीति से असन्तुष्ट होकर उसके विरुद्ध षड्यन्त्र रचने लगे। लोदी की पराजय का मुख्य कारण उसके सरदारों एवं सूबेदारों का उससे रुष्ट होना था।कुछ सरदारों ने केवल ऊपर से लोदी का साथ दिया तथा वे भीतर-ही-भीतर बाबर के सहयोगी बने रहे।स्वयं इब्राहीम के भाई व पंजाब के सूबेदार दौलत खाँ लोदी ने बाबर को भारत पर आक्रमण करने का निमन्त्रण भेजा था।

4. अफगानों का सैनिक संगठन मुगलों के सैनिक संगठन की तुलना में बहुत अकुशल और दुर्बल था।लोदी के अधिकांश सैनिक किराये के थे तथा पहले उन्हें अपनी जान-माल की चिन्ता अधिक थी। अफगान सेना में

अनुशासन का पूर्णतया अभाव था ,अतएव उन्होंने युद्ध में कोई सक्रिय वीरता न दिखाई। फलत: युद्ध में बाबर की विजय हुई।जबकि मुगल सैनिक संख्या में कम होते भी हुए बहुत अच्छी तरह संगठित और व्यवस्थित थे तथा उनमें अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए जान देने की लगन थी। फलत: युद्ध में बाबर की विजय हुई।

5. बाबर की विजय में उसके द्वारा अपनाई गई 'तुलगमा नीति' (रिजर्व सेना) ने भी उल्लेखनीय योगदान दिया।जब युद्ध अपनी चरमसीमा पर था और दोनों ओर के सैनिक युद्ध करते हुए थक गये थे, तब बाबर की सुरक्षित सेना ने पूरे जोश और स्फूर्ति के साथ युद्ध स्थल में प्रवेश किया और बाबर को विजयश्री दिलवा दी।

6. अफगान सेना में तोपखाने का पूर्णतया अभाव था। इसके विपरीत बाबर के पास 700 तोपों का एक विशाल तोपखाना था। उसके पास अच्छी बन्दूकें भी थीं, जिनकी

तेज मार अफगान सेना सहन न कर सकी और शीघ्र ही युद्ध का मैदान छोड़कर भाग खड़ी हुई। इसके अतिरिक्त अफगानों की युद्ध पद्धति दोषपूर्ण थी।

इस प्रकार स्पष्ट है कि पानीपत के प्रथम युद्ध में बाबर के कुशल नेतृत्व, उसकी सेना का अनुशासन एवं संगठन तथा तोपखाने आदि ने मिलकर बाबर को विजयी बनाया तथा दिल्ली सल्तनत का सदा के लिए अन्त हो गया।

References: Internet & Competitive books.